

## दैनिक समसामयिकी विश्लेषण

समय: 45 मिनट

दिनांक: 26-06-2025

### विषय सूची

- » शंघाई सहयोग संगठन रक्षा मंत्रियों की बैठक
- » श्री नारायण गुरु और महात्मा गांधी के बीच ऐतिहासिक वार्ता का शताब्दी समारोह
- » 41 वर्ष के अंतराल के बाद भारतीय अंतरिक्ष यात्री अंतरिक्ष में
- » लघु वित्त बैंकों के लिए आरबीआई के संशोधित पीएसएल दिशानिर्देश
- » बिहार को मिलेगा प्रथम परमाणु ऊर्जा संयंत्र

### संक्षिप्त समाचार

- » प्रधानमंत्री ने 48वीं प्रगति बैठक की अध्यक्षता की
- » भारत और वियतनाम के बीच 13वां राजनीतिक परामर्श आयोजित
- » ट्राइजेमिनल न्यूरालिया
- » लचीले वर्षा आधारित परिवेशों के लिए कृषि वानिकी
- » भारत की प्रथम कांटम कंप्यूटिंग वैली
- » केंद्र ने अंतर्राष्ट्रीय आलू केंद्र की दक्षिण एशिया इकाई को मंजूरी दी
- » आकस्मिक बाढ़
- » प्रधान मंत्री संग्रहालय और पुस्तकालय

## शंघाई सहयोग संगठन (SCO) रक्षा मंत्रियों की बैठक

### संदर्भ

- किंगदाओ, चीन में आयोजित शंघाई सहयोग संगठन (SCO) रक्षा मंत्रियों की बैठक में भारत ने संयुक्त घोषणा पत्र पर हस्ताक्षर करने से मना कर दिया है।

### परिचय

- भारत संयुक्त दस्तावेज़ की भाषा से संतुष्ट नहीं है और उसमें सीमा पार आतंकवादी गतिविधियों, विशेष रूप से हालिया पहलगाम आतंकी हमले का उल्लेख नहीं किया गया था।
- इस दस्तावेज़ को समर्थन न देने के कारण यह बैठक बिना किसी संयुक्त घोषणा के समाप्त हो गई।

### शंघाई सहयोग संगठन (SCO)

- शंघाई फाइव की उत्पत्ति 1996 में चार पूर्व सोवियत गणराज्यों और चीन के बीच सीमा निर्धारण और सैन्यकरण को समाप्त करने से संबंधित बातचीत से हुई थी।
  - शंघाई फाइव के सदस्य थे: कज़ाखिस्तान, चीन, किर्गिज़स्तान, रूस और ताजिकिस्तान।
  - 2001 में उज्बेकिस्तान के शामिल होने पर इस समूह को शंघाई सहयोग संगठन नाम दिया गया।
- उद्देश्य: मध्य एशियाई क्षेत्र में आतंकवाद, अलगाववाद और उग्रवाद को रोकने के लिए क्षेत्रीय सहयोग को बढ़ावा देना।
- सदस्य: चीन, रूस, भारत, पाकिस्तान, ईरान, बेलारूस और मध्य एशिया के चार देश—कज़ाखिस्तान, किर्गिज़स्तान, ताजिकिस्तान, उज्बेकिस्तान।
  - भारत 2017 में पूर्ण सदस्य बना और 2023 में इसकी घूर्णन अध्यक्षता ग्रहण की।
  - सदस्य देश वैश्विक GDP का लगभग 30 प्रतिशत और विश्व की जनसंख्या का लगभग 40 प्रतिशत योगदान करते हैं।
- पर्यवेक्षक दर्जा: अफ़ग़ानिस्तान और मंगोलिया।

- भाषा:** SCO की आधिकारिक भाषा रूसी और चीनी हैं।
- संरचना:** इसका सर्वोच्च निर्णय लेने वाला निकाय है देशों के प्रमुखों की परिषद (CHS), जो वर्ष में एक बार मिलती है। इस संगठन की दो स्थायी संस्थाएं हैं — बीजिंग में सचिवालय और ताशकंद में क्षेत्रीय आतंकवाद-रोधी ढांचे (RATS) की कार्यकारी समिति।

### भारत के लिए महत्व

- क्षेत्रीय सुरक्षा:** SCO एक ऐसा मंच है जहां भारत सुरक्षा संबंधी चिंताओं, जैसे कि आतंकवाद, अलगाववाद और उग्रवाद पर ध्यान दे सकता है।
  - RATS के माध्यम से भारत खुफिया जानकारी साझा करने और आतंकवाद विरोधी अभियानों में सहयोग करता है।
- चीन और पाकिस्तान के संतुलन में:** हालांकि दोनों ही SCO के सदस्य हैं, यह मंच भारत को अपनी स्थिति स्पष्ट करने और भारत-विरोधी विमर्शों को रोकने में सहायता करता है।
- ऊर्जा सुरक्षा:** मध्य एशिया तेल, गैस और यूरेनियम से समृद्ध है, SCO की सदस्यता भारत को इन संसाधनों से संबंध मजबूत करने का अवसर देती है।
- आर्थिक सहयोग:** संगठन सदस्य देशों के बीच व्यापार और निवेश के अवसर बढ़ाने के लिए आर्थिक सहयोग को बढ़ावा देता है।
- मध्य एशिया के लिए पहुँच:** SCO भारत के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि इसकी सदस्यता और फोकस मध्य एशिया पर है—एक ऐसा क्षेत्र जहां भारत संबंध बढ़ाना चाहता है, परंतु संपर्क में सीमाएं हैं।

### चुनौतियाँ

- चीन-पाकिस्तान धुरी:** SCO में चीन और पाकिस्तान के मजबूत संबंध भारत की रणनीतिक स्थिति को जटिल बनाते हैं, जिससे भारत की क्षेत्रीय सुरक्षा पर पकड़ प्रभावित हो सकती है।
- भू-राजनीतिक तनाव:** चीन और पाकिस्तान के साथ चल रहे सीमा विवाद और भू-राजनीतिक तनाव SCO

की चर्चाओं में भी परिलक्षित होते हैं, जिससे भारत की रचनात्मक भागीदारी मुश्किल हो जाती है।

- आर्थिक विकास पर ध्यान की कमी:** SCO का प्राथमिक ध्यान सुरक्षा पर होता है, जिससे कभी-कभी आर्थिक और विकासात्मक सहयोग की उपेक्षा होती है, जो भारत के हित में है।
- संस्थागत सीमाएं:** SCO में निर्णय सर्वसम्मति से होता है, जिससे कई महत्वपूर्ण मुद्दों पर प्रगति धीमी हो जाती है।

### निष्कर्ष

- SCO भारत के लिए एक रणनीतिक मंच है जिससे वह यूरोशियाई शक्तियों के साथ संपर्क कर सकता है, क्षेत्रीय स्थिरता को बढ़ावा दे सकता है, अपनी आर्थिक एवं ऊर्जा सुरक्षा को सुनिश्चित कर सकता है और आतंकवाद विरोधी सहयोग को मजबूत कर सकता है।
- इन चुनौतियों के बावजूद, भारत SCO के माध्यम से अपने “क्षेत्र में सभी के लिए सुरक्षा एवं विकास (SAGAR)” के दृष्टिकोण को बढ़ावा देता है और इसे पश्चिमी गठबंधनों के संतुलन के रूप में प्रयोग करता है।

Source: AIR

## श्री नारायण गुरु और महात्मा गांधी के बीच ऐतिहासिक वार्ता का शताब्दी समारोह

### संदर्भ

- पीएम मोदी ने नई दिल्ली के विज्ञान भवन में श्री नारायण गुरु और महात्मा गांधी के बीच ऐतिहासिक बातचीत के शताब्दी समारोह का उद्घाटन किया।
- यह संवाद 12 मार्च, 1925 को केरल के शिवगिरी मठ में हुआ था।
- श्री नारायण गुरु और महात्मा गांधी के बीच बातचीत को उस समय के प्रमुख मुद्दों के साथ गहन जुड़ाव के लिए याद किया जाता है;
- वैकोम सत्याग्रह,
- धार्मिक रूपांतरण का सवाल,
- अहिंसा का सिद्धांत,
- अस्पृश्यता का उन्मूलन, और
- हाशिए पर पड़े समुदायों का उत्थान।

## श्री नारायण गुरु और महात्मा गांधी के विचार

मुद्दा	श्री नारायण गुरु	महात्मा गांधी
धार्मिक रूपांतरण	धर्मांतरण का विरोध किया; हिंदू धर्म के अंदर सुधार पर बल दिया।	धर्मांतरण का विरोध किया; हिंदू धर्म में बने रहने को बढ़ावा दिया।
अहिंसा	व्यावहारिक दृष्टिकोण; इसका समर्थन किया, लेकिन पूर्णतः नहीं।	अहिंसा को एक मूल, सार्वभौमिक सिद्धांत माना।
अस्पृश्यता	किसी भी धार्मिक आधार को नकार दिया गया; सम्पूर्ण उन्मूलन की मांग की गई।	इसे पाप कहा गया; भीतर से क्रमिक सुधार की मांग की गई।
हाशिए पर पड़े लोगों का उत्थान	शिक्षा और आर्थिक आत्मनिर्भरता पर बल दिया गया।	नैतिक उत्थान और आध्यात्मिक गरिमा पर ध्यान केंद्रित किया गया।

### वैकोम सत्याग्रह के बारे में

- कारण:** यह आंदोलन अस्पृश्यता की प्रथा के विरुद्ध शुरू किया गया था।
  - तत्कालीन त्रावणकोर रियासत के वैकोम में, निम्न जातियों के लोगों, विशेषतः दलितों को वैकोम शिव मंदिर की ओर जाने वाली सड़कों पर चलने के अधिकार से वंचित कर दिया गया था।
- नेतृत्व:** इसका नेतृत्व टी.के. माधवन, के. केलप्पन और अन्य प्रमुख नेताओं ने किया था।
  - महात्मा गांधी ने भी इस आंदोलन का समर्थन किया और अपनी सलाह भेजी, हालांकि उन्होंने शुरू में विरोध प्रदर्शनों में शारीरिक रूप से भाग नहीं लिया था।
  - एक प्रमुख समाज सुधारक और आत्म-सम्मान आंदोलन के नेता ई.वी. रामासामी पेरियार ने भी आंदोलन को समर्थन दिया।

### श्री नारायण गुरु के बारे में

- श्री नारायण गुरु भारत में एक दार्शनिक, आध्यात्मिक नेता और समाज सुधारक थे।
- उन्होंने आध्यात्मिक ज्ञान और सामाजिक समानता को बढ़ावा देने के लिए केरल के जाति-ग्रस्त समाज में अन्याय के खिलाफ सुधार आंदोलन का नेतृत्व किया।
- उन्होंने शिक्षा, आध्यात्मिकता और सामाजिक उत्थान को बढ़ावा देने के लिए शिवगिरी में शारदा मठ जैसी संस्थाओं की स्थापना की।
- उनका नारा, “एक जाति, एक धर्म, सभी के लिए एक ईश्वर,” उनके दर्शन की आधारशिला है और केरल में एक व्यापक रूप से मान्यता प्राप्त कहावत है।
- महत्वपूर्ण कार्य: दैव दशकम, निवृत्ति पंचकम और आत्मोपदेश शतकम।

### संवाद की विरासत

- गुरुओं के निर्णायक रूख ने गांधी को भारत के स्वतंत्रता संग्राम में हरिजन मिशन को प्राथमिकता देने के लिए प्रेरित किया।
- उनकी बैठक ने इस सिद्धांत को पुष्ट किया कि सच्चा सामाजिक उत्थान शांतिपूर्ण विरोध की मांग करता है।
- शिक्षा और आर्थिक प्रगति पर जोर दोनों सुधारकों के दृष्टिकोण का केंद्र बन गया।

Source: DD NEWS

### 41 साल के अंतराल के बाद भारतीय अंतरिक्ष यात्री अंतरिक्ष में

#### संदर्भ

- हाल ही में, एक भारतीय अंतरिक्ष यात्री, हंगरी और पोलैंड के तीन अन्य लोगों के साथ, एक्सओम-4 मिशन (नासा का चौथा निजी अंतरिक्ष यात्री मिशन) पर सवार होकर अंतरिक्ष में पहुंचे।
- ग्रुप कैप्टन शुभांशु शुक्ला अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन (ISS) पर पहुंचने वाले पहले भारतीय और राकेश शर्मा के 1984 के मिशन के बाद अंतरिक्ष में जाने वाले दूसरे भारतीय बन गए।

### अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन

- यह एक स्थायी रूप से चालक दल वाली कक्षीय प्रयोगशाला के रूप में कार्य करता है, जहाँ विश्व भर के अंतरिक्ष यात्री रहते हैं और काम करते हैं, जबकि वे लगभग प्रत्येक 90 मिनट में पृथ्वी की परिक्रमा करते हैं।
- यह पृथ्वी से लगभग 400 किमी दूर स्थित है और 28,000 किमी प्रति घंटे की गति से घूम रहा है।

### आई.एस.एस. के बारे में मुख्य तथ्य

- लॉन्च:** पहला मॉड्यूल 1998 में लॉन्च किया गया था; यह 2000 से लगातार कार्य कर रहा है।
- साझेदारी:** अंतरिक्ष एजेंसियों के एक अंतरराष्ट्रीय गठबंधन द्वारा संचालित - नासा (यूएसए), रोस्कोस्मोस (रूस), ईएसए (यूरोप), जेएसए (जापान), और सीएसए (कनाडा)।
- उद्देश्य:** आईएसएस कार्यक्रम अंतरराष्ट्रीय उड़ान चालक दल, विभिन्न प्रक्षेपण वाहनों, दुनिया भर में संचालन और प्रशिक्षण सुविधाओं, संचार नेटवर्क और वैश्विक वैज्ञानिक अनुसंधान समुदाय को एकजुट करता है।

### कैसे Axiom-4 मिशन भारत के भविष्य के अंतरिक्ष कार्यक्रम को बढ़ावा देता है?

- गगनयान के लिए महत्वपूर्ण इनपुट्स:** Axiom-4 मिशन में वैज्ञानिक प्रयोग, टीम समन्वय और वास्तविक समय में समस्या का समाधान शामिल है — ये सभी कौशल भारत के पहले स्वदेशी मानवयुक्त मिशन ‘गगनयान’ के लिए आवश्यक हैं।
- वैज्ञानिक सहयोग और नवाचार:** Ax-4 मिशन में 31 देशों के 60 से अधिक प्रयोग शामिल हैं, जिनमें भारत ने सूक्ष्म गुरुत्वाकर्षण में मांसपेशियों के क्षय और स्टेम सेल व्यवहार पर अध्ययनों में योगदान दिया है।
- ये अध्ययन ISRO की स्पेस मेडिसिन और दीर्घकालिक अंतरिक्ष अभियानों में बढ़ती रुचि से मेल खाते हैं, जैसे कि मधुमेह प्रबंधन, मांसपेशियों की सेहत और कैंसर अनुसंधान।**

- ▲ यह मानव शरीर क्रिया-विज्ञान को अंतरिक्ष में समझने और भविष्य के चंद्र या मंगल अभियानों की तैयारी के लिए अत्यंत आवश्यक है।
- वैश्विक साइरोडारियों को सुदृढ़ करना: यह मिशन अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष एजेंसियों के साथ भारत के गहराते संबंधों को रेखांकित करता है।
- Axiom-4 यह प्रदर्शित करता है कि भारत NASA, SpaceX और Axiom Space के साथ समन्वित रूप से वाणिज्यिक और वैज्ञानिक अंतरिक्ष कूटनीति में भागीदारी के लिए पूरी तरह तैयार है।

Source: TH

## लघु वित्त बैंकों के लिए आरबीआई के संशोधित पीएसएल दिशानिर्देश

### समाचार में

- भारतीय रिजर्व बैंक ने लघु वित्त बैंकों के लिए प्राथमिकता क्षेत्र क्रण मानदंडों में ढील दी है।

### क्या आप जानते हैं?

- प्राथमिकता क्षेत्र क्रण आरबीआई द्वारा अनिवार्य नीति है, जिसके अंतर्गत बैंकों को अपने क्रणों का एक निश्चित भाग उन प्रमुख क्षेत्रों को आवंटित करने की आवश्यकता होती है, जो क्रण की कमी का सामना करते हैं, लेकिन समावेशी आर्थिक विकास के लिए महत्वपूर्ण हैं।
- इसमें कृषि, एमएसएमई, निर्यात क्रण, शिक्षा, आवास, सामाजिक बुनियादी ढाँचा, नवीकरणीय ऊर्जा, कमज़ोर वर्ग और अन्य क्षेत्रों को दिए जाने वाले क्रण शामिल हैं।
- ▲ मार्च 2025 में, आरबीआई ने बैंकों के लिए संशोधित पीएसएल दिशा-निर्देश जारी किए थे, जिसमें आवास और शिक्षा जैसे क्रणों की सीमा बढ़ाई गई थी, जबकि शहरी सहकारी बैंकों के लिए पीएसएल लक्ष्य 75 प्रतिशत से घटाकर 60 प्रतिशत कर दिया गया था।

### स्मॉल फाइनेंस बैंक (SFBs)

- **परिचय:** ये बैंक भारत में भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) के विनियमन के अंतर्गत संचालित होते हैं, और शीर्ष बैंक की बैंकिंग लोकपाल योजना, 2006 (समय-समय पर संशोधित) के अधीन आते हैं।
  - ▲ SFBs को कंपनियों अधिनियम, 2013 के अंतर्गत सार्वजनिक लिमिटेड कंपनियों के रूप में पंजीकृत किया गया है और ये बैंकिंग विनियमन अधिनियम, 1949 तथा RBI अधिनियम, 1934 द्वारा शासित होते हैं।
  - ▲ ये वाणिज्यिक बैंकों के लिए निर्धारित RBI की सावधानीात्मक मानदंडों (CRR और SLR सहित) के अधीन होते हैं।
- **उद्देश्य:** SFBs का उद्देश्य छोटे व्यवसायों, किसानों, सूक्ष्म-उद्योगों, और असंगठित क्षेत्र जैसे कम सेवा-प्राप्त क्षेत्रों को कम लागत वाली, तकनीक-संचालित सेवाओं के माध्यम से बचत विकल्प और क्रण प्रदान करना है।
- **पात्रता:** पात्र प्रवर्तकों में वे निवासी व्यक्ति शामिल हैं जिनके पास बैंकिंग/वित्तीय क्षेत्र में 10 वर्षों का अनुभव हो, निवासी स्वामित्व वाली कंपनियाँ/समितियाँ, और मौजूदा एनबीएफसी, एमएफआई तथा लेबर को-ऑपरेटिव बैंक (LABS)। प्रवर्तकों का कम-से-कम 5 वर्षों का मजबूत ट्रैक रिकॉर्ड होना अनिवार्य है।
- **प्रभाव क्षेत्र:** स्मॉल फाइनेंस बैंक बुनियादी बैंकिंग सेवाएँ प्रदान करते हैं जैसे कि बचत खाते, चालू खाते, सावधि जमा, आवर्ती जमा, क्रण आदि।
- **पूंजी आवश्यकताएँ:** न्यूनतम चुकता इक्विटी पूंजी ₹100 करोड़ होनी चाहिए, जिसमें प्रारंभिक रूप से प्रवर्तकों की भागीदारी कम-से-कम 40% होनी चाहिए (जो 12 वर्षों के अंदर घटाकर 26% करनी होगी)। विदेशी हिस्सेदारी निजी क्षेत्र के बैंकों के लिए लागू FDI नीति का पालन करती है।
- **RBI द्वारा घोषित प्रमुख बदलाव SFBs के लिए प्राथमिकता क्षेत्र क्रण (PSL) का लक्ष्य वर्तमान वित्तीय वर्ष से घटाकर उनके क्रणों का 60 प्रतिशत कर दिया गया है, जो पहले 75 प्रतिशत था।**

- PSL के अतिरिक्त घटक (35 प्रतिशत) को घटाकर 20 प्रतिशत कर दिया जाएगा, जिससे वित्तीय वर्ष 2025-26 से कुल PSL लक्ष्य समायोजित शुद्ध बैंक ऋण (ANBC) या ऑफ-बैलेंस शीट जोखिम का ऋण समतुल्य (CEOBE) — जो भी अधिक हो — का 60 प्रतिशत हो जाएगा।
- SFBs अपने ANBC या CEOBE (जो भी अधिक हो) का 40 प्रतिशत विभिन्न उप-क्षेत्रों को PSL के मौजूदा दिशा-निर्देशों के अनुसार आवंटित करते रहेंगे, जबकि शेष 20 प्रतिशत उन एक या एक से अधिक उप-क्षेत्रों को आवंटित किया जा सकता है जहाँ बैंक की प्रतिस्पर्धात्मक बढ़त हो।

**Source:** BS

## बिहार को मिलेगा प्रथम परमाणु ऊर्जा संयंत्र संदर्भ

- बिहार अपना प्रथम परमाणु ऊर्जा संयंत्र स्थापित करने जा रहा है, जिससे वह भारत सरकार के राष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा मिशन से लाभान्वित होने वाले पहले छह राज्यों में शामिल हो जाएगा।

### परिचय

- यह घोषणा भारत की ऊर्जा संरचना में विविधता लाने, क्षेत्रीय ऊर्जा सुरक्षा को मजबूत करने और स्मॉल मॉड्यूलर रिएक्टर्स (SMRs) जैसी उन्नत तकनीकों को अपनाने के व्यापक प्रयास का हिस्सा है।
- सरकार ने बिहार में 1,000 मेगावाट बैटरी भंडारण क्षमता परियोजना को भी मंजूरी दी है, जिसका उद्देश्य ग्रिड की स्थिरता बढ़ाना और नवीकरणीय ऊर्जा को प्रणाली में एकीकृत करना है।
- इस पहल के लिए सरकार प्रति मेगावाट ₹18 लाख की व्यवहार्यता अंतर निधि (Viability Gap Funding) प्रदान करेगी।

### परमाणु ऊर्जा क्या है?

- परमाणु ऊर्जा वह ऊर्जा है जो परमाणु प्रतिक्रियाओं के दौरान निकलती है, या तो विखंडन (परमाणु नाभिक का विखंडन) या संलयन (परमाणु नाभिक का विलय) के माध्यम से।

- परमाणु विखंडन में, भारी परमाणु नाभिक, जैसे कि यूरेनियम या प्लूटोनियम, हल्के नाभिक में विभाजित हो जाते हैं, जिससे बड़ी मात्रा में ऊर्जा निकलती है।
- इस प्रक्रिया का उपयोग परमाणु ऊर्जा संयंत्रों में बिजली उत्पन्न करने के लिए किया जाता है।

### स्मॉल मॉड्यूलर रिएक्टर्स (SMRs) क्या हैं?

- स्मॉल मॉड्यूलर रिएक्टर्स (SMRs) उन्नत परमाणु रिएक्टर होते हैं जिनकी प्रति इकाई विद्युत उत्पादन क्षमता 300 मेगावाट (MW(e)) तक होती है, जो पारंपरिक परमाणु संयंत्रों की उत्पादन क्षमता का लगभग एक-तिहाई होता है।
  - स्मॉल** – पारंपरिक परमाणु रिएक्टर की तुलना में आकार में बहुत छोटा।
  - मॉड्यूलर** – जिससे इसके सिस्टम और घटकों को फैक्ट्री में तैयार करके किसी स्थान पर एक इकाई के रूप में स्थापित किया जा सकता है।
  - रिएक्टर्स** – जो परमाणु विखंडन के माध्यम से ऊर्जा उत्पन्न करने के लिए ताप उत्पन्न करते हैं।
- SMR के चार प्रमुख प्रकार हैं:** लाइट वॉटर, हार्ड टेम्परेचर गैस, लिकिवड मेटल और मोल्टन सॉल्ट।
- SMR के लाभ बेहतर सुरक्षा विशेषताएँ:** SMR में प्राकृतिक संवहन और गुरुत्वाकर्षण-आधारित कूलिंग जैसे निष्क्रिय सुरक्षा तंत्र होते हैं, जो बाहरी विद्युत या मानवीय हस्तक्षेप के बिना रिएक्टर को अधिक गर्म होने से रोकते हैं।
- लचीलापन:** SMR की मॉड्यूलर प्रकृति उन्हें चरणबद्ध रूप से स्थापित करने की सुविधा देती है, जो बढ़ती ऊर्जा मांगों के लिए उपयुक्त है।
- दूरदराज और ऑफ-ग्रिड क्षेत्रों के लिए अनुकूलता:** SMR के कॉम्पैक्ट डिज़ाइन उन्हें छोटे ग्रिड सिस्टम, जिला ताप आपूर्ति और समुद्री जल विलवणीकरण जैसे अनुप्रयोगों के लिए उपयुक्त बनाते हैं।
- लागत-कुशल निर्माण:** नियंत्रित वातावरण में पूर्व-निर्माण से साइट पर निर्माण का समय और लागत दोनों घटते हैं।

## भारत में परमाणु क्षमता बढ़ाने के लिए सरकारी पहलें

- भारत का लक्ष्य अपनी वर्तमान 8,180 मेगावाट परमाणु स्थापित क्षमता को 2031–32 तक 22,480 मेगावाट तक बढ़ाना है।
- गुजरात, राजस्थान, तमिलनाडु, हरियाणा, कर्नाटक और मध्य प्रदेश में 8,000 मेगावाट क्षमता के 10 रिएक्टरों का निर्माण और कमीशनिंग प्रगति पर है।
- अंतरराष्ट्रीय सहयोग:** आंध्र प्रदेश के कोव्वाडा में अमेरिका के सहयोग से  $6 \times 1,208$  मेगावाट परमाणु रिएक्टरों की स्थापना के लिए सैद्धांतिक मंजूरी दी गई है।

## भारत में परमाणु ऊर्जा के हालिया विकास

- झारखंड के जादूगड़ा (भारत की सबसे पुरानी यूरेनियम खान) के पास एक महत्वपूर्ण नया यूरेनियम भंडार खोजा गया है।
- राजस्थान परमाणु ऊर्जा परियोजना (RAPP-7)** की क्रिटिकलिटी प्राप्ति: 19 सितंबर, 2024 को RAPP की इकाई-7 ने क्रिटिकलिटी प्राप्त की — जो परमाणु रिएक्टर परिचालन में एक महत्वपूर्ण चरण है, जो आत्म-निर्भर विखंडन श्रृंखला प्रतिक्रिया की शुरुआत को दर्शाता है।
  - यह तीसरा स्वदेशी परमाणु रिएक्टर है जिसने यह स्थिति प्राप्त की है।
- काकरापार परमाणु ऊर्जा स्टेशन की इकाई 3 और 4, प्रत्येक 700 मेगावाट विद्युत उत्पादन क्षमता वाली, ने वित्त वर्ष 2023–24 में वाणिज्यिक परिचालन शुरू किया।
  - ये इतने बड़े स्तर के पहले स्वदेशी रूप से डिज़ाइन किए गए प्रेसराइज़ फ्लैट वॉटर रिएक्टर (PHWRs) में से हैं।
- भारत का प्रथम 500 मेगावाट फास्ट ब्रीडर रिएक्टर (PFBR)** कलपक्कम में 2024 में प्रमुख उपलब्धियाँ प्राप्त कर चुका है, जिनमें प्राइमरी सोडियम फिलिंग, सोडियम पंपों का कमीशनिंग और कोर लोडिंग शामिल हैं।

## परमाणु ऊर्जा मिशन

- क्षमता लक्ष्य:** 2047 तक 100 गीगावाट (वर्तमान क्षमता: 8 गीगावाट)।
- छोटे मॉड्यूलर रिएक्टर (एसएमआर):** अनुसंधान एवं विकास तथा स्वदेशी एसएमआर विकास के लिए ₹20,000 करोड़ का आवंटन।
- लक्ष्य:** 2033 तक पांच परिचालन एसएमआर।
- निजी क्षेत्र की भागीदारी:** प्रमुख विधानों में प्रस्तावित संशोधन।
- परमाणु ऊर्जा अधिनियम, 1962:** परमाणु ऊर्जा विकास और विनियमन के लिए रूपरेखा।
- परमाणु क्षति के लिए नागरिक दायित्व अधिनियम, 2010:** परमाणु घटनाओं के लिए क्षतिपूर्ति तंत्र सुनिश्चित करना।
- क्षमता विस्तार:** गुजरात, राजस्थान, तमिलनाडु, हरियाणा, कर्नाटक और मध्य प्रदेश में 10 नए रिएक्टर (कुल 8 गीगावाट) निर्माणाधीन हैं।
  - अमेरिका के सहयोग से आंध्र प्रदेश में  $6 \times 1208$  मेगावाट के परमाणु संयंत्र के लिए स्वीकृति।
- परमाणु साझेदारी:** भारत लघु रिएक्टर और भारत लघु मॉड्यूलर रिएक्टर विकसित करने के लिए निजी क्षेत्र के साथ सहयोग।

Source: IE

## संक्षिप्त समाचार

### प्रधानमंत्री ने 48वीं प्रगति बैठक की अध्यक्षता की

#### समाचार में

- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 48वीं प्रगति बैठक की अध्यक्षता की, जिसका ध्यान खान, रेलवे और जल संसाधन में महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचा परियोजनाओं में तेजी लाने पर केंद्रित था।

#### सक्रिय शासन और समय पर कार्यान्वयन (प्रगति)

- यह एक इंटरैक्टिव प्लेटफॉर्म है जिसे केंद्र और राज्य दोनों स्तरों पर प्रमुख सरकारी कार्यक्रमों और परियोजनाओं

की निगरानी और समीक्षा करते हुए नागरिकों की शिकायतों को दूर करने के लिए डिज़ाइन किया गया है।  
▲ 2015 में लॉन्च किया गया।

Monitors and reviews key programmes and projects by the Government of India.

Addresses issues flagged by State Governments, ensuring their concerns are heard.

Enhances transparency and improves accountability in project implementation.

Built-in feature to maintain decisions for follow-up and continuous review.

Facilitates real-time collaboration and exchange among various stakeholders.

Enables the PMO's office to resolve implementation issues and expedite project completion.

Tackles bottlenecks in projects caused by interdependencies across government bodies.

Operates with a three-tier IT-based system involving the PMO, GoI Secretaries, and State Chief Secretaries.

साझेदारी के अंतर्गत प्रगति की समीक्षा की।

- चर्चाओं में रक्षा, समुद्री सुरक्षा, व्यापार, ऊर्जा, प्रौद्योगिकी, संस्कृति और शिक्षा सहित कई क्षेत्रों को शामिल किया गया।
- दोनों पक्षों ने आतंकवाद की निंदा की और विकास पहलों तथा छात्रवृत्ति के माध्यम से सहयोग को रेखांकित किया।
- भारत ने आतंकवाद के विरुद्ध वियतनाम के समर्थन की सराहना की, जबकि वियतनाम ने भगवान बुद्ध के पवित्र अवशेषों की प्रदर्शनी के आयोजन के लिए भारत का आभार व्यक्त किया, जिसे 1.4 करोड़ से अधिक लोगों ने देखा।

### ऐतिहासिक संबंध

#### प्रगति और प्रगति की मुख्य विशेषताएं

- 2015 से, प्रगति ने रणनीतिक परियोजना चयन, मजबूत नेतृत्व और डिजिटल शासन को सक्षम करके भारत के बुनियादी ढांचे और सामाजिक विकास को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।
- इसने चुनौतियों पर नियंत्रण पाने, राज्यों के बीच सहयोग बढ़ाने और प्रमुख सामाजिक पहलों का समर्थन करने में सहायता की है, जिससे देश के विकास की गति में उल्लेखनीय तीव्रता आई है।

Source: PIB

### भारत और वियतनाम के बीच 13वां राजनीतिक परामर्श आयोजित

#### समाचार में

- भारत और वियतनाम ने नई दिल्ली में 13वीं राजनीतिक परामर्श बैठक और 10वीं रणनीतिक वार्ता आयोजित की।

#### बैठक के परिणाम

- दोनों पक्षों ने संयुक्त दृष्टिकोण (2020) और 2024–2028 कार्य योजना द्वारा निर्देशित व्यापक रणनीतिक

### व्यापार, आर्थिक और विकासात्मक सहयोग

- भारत और वियतनाम सक्रिय व्यापार और आर्थिक संबंध बनाए रखते हैं, जिनका द्विपक्षीय व्यापार वर्ष 2023–2024 में लगभग 14.8–14.9 अरब अमेरिकी डॉलर रहा।
- भारत वियतनाम को इंजीनियरिंग वस्तुएं, कृषि उत्पाद, दवाएँ और रसायन निर्यात करता है, जबकि वियतनाम से इलेक्ट्रॉनिक्स, मशीनरी, रसायन, कॉफी, चाय एवं वस्त्र आयात करता है।

- व्यापार को ASEAN-भारत व्यापार समझौते और नियमित व्यापार प्रतिनिधिमंडलों, मेलों तथा प्रदर्शनियों द्वारा सहयोग प्राप्त है।

### रक्षा

- भारत और वियतनाम के बीच मजबूत रक्षा और सुरक्षा सहयोग है, जिसे 2009 के रक्षा सहयोग पर समझौता ज्ञापन एवं 2015 की रक्षा सहयोग पर संयुक्त दृष्टिकोण जैसे प्रमुख समझौतों द्वारा निर्देशित किया गया है।
- जून 2022 में दोनों देशों ने “2030 तक की रक्षा साझेदारी पर संयुक्त दृष्टिकोण वक्तव्य” को अपनाया और पारस्परिक लॉजिस्टिक सहयोग पर एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए।
- हाल ही में भारत ने वियतनाम को एक मिसाइल कोर्वेट (आईएनएस किर्पन) भेंट की है और ब्रह्मोस सुपरसोनिक मिसाइलों के लिए लगभग 700 मिलियन डॉलर के समझौते के करीब है।
- दोनों देश नियमित रूप से द्विपक्षीय नौसेना अभ्यास (जैसे PASSEX), संयुक्त सैन्य अभ्यास VINBAX, पोर्ट कॉल और समुद्री क्षेत्र जागरूकता पर सहयोग करते हैं।

Source: AIR

## ट्राइजेमिनल न्यूरालिज्या

### संदर्भ

- ट्राइजेमिनल न्यूरालिज्या (TN), एक दुर्लभ और अत्यंत पीड़ादायक न्यूरोलॉजिकल स्थिति है, जो हाल के वर्षों में बढ़ते मामलों और देर से निदान के कारण सार्वजनिक जागरूकता प्राप्त कर रही है।

### ट्राइजेमिनल न्यूरालिज्या क्या है?

- ट्राइजेमिनल न्यूरालिज्या एक पुरानी दर्द की बीमारी है जो ट्राइजेमिनल नस को प्रभावित करती है, जो आंख, गाल और जबड़े तक फैली होती है।
- हालांकि मनुष्यों में दो ट्राइजेमिनल नसें होती हैं, परंतु दर्द सामान्यतः चेहरे के केवल एक ओर ही होता है। इस स्थिति को टिक डोलोरेक्स (tic dououreux) भी कहा जाता है, जिसका अर्थ है “पीड़ादायक झटका”।

- TN से होने वाला दर्द इतना तीव्र और अनियमित हो सकता है कि कुछ मरीजों में यह आत्मघाती विचारों को जन्म देता है। इसी कारण इसे ‘सुसाइड डिजीज’ भी कहा जाता है।

### ट्राइजेमिनल न्यूरालिज्या के कारण

- TN में दर्द सामान्यतः ट्राइजेमिनल नस के उस भाग में रुकावट या उत्तेजना के कारण होता है, जहाँ यह ब्रेनस्टेम (मस्तिष्क तना) में प्रवेश करती है।
- इसके मुख्य कारण हैं:
  - किसी रक्त वाहिका द्वारा दबाव
  - मल्टीपल स्क्लेरोसिस (MS)
  - ट्यूमर
  - सर्जरी या आघात से तंत्रिका क्षति आदि
- उपचार दवाएँ: कार्बामाज़ेपिन जैसे एंटी-कन्वल्सेंट्स (दौरा-रोधी दवाएं)
- सर्जरी: माइक्रोवैस्कुलर डीकंप्रेशन
- मिनिमली इनवेसिव विकल्प: गामा नाइफ रेडियोसर्जरी, रेडियोफ्रीक्वेंसी एब्लेशन

Source: BS

### लचीले वर्षा आधारित परिदृश्यों के लिए कृषि वानिकी

#### समाचार में

- हाल ही में “जलवायु लचीले वर्षा-आधारित परिदृश्यों के लिए एग्रोफॉरेस्ट्री” पर एक कार्यशाला नई दिल्ली में आयोजित की गई।

#### एग्रोफॉरेस्ट्री

- यह एक भू-प्रबंधन प्रणाली है जो पेड़ों को फसलों और/या पशुओं के साथ एकीकृत करती है, जिससे पारिस्थितिक और सामाजिक-आर्थिक लाभ प्राप्त होते हैं।
- यह एक प्रकृति-आधारित समाधान है जो उत्पादकता, आय, खाद्य सुरक्षा एवं जलवायु लचीलापन को बढ़ाता है, विशेष रूप से लघु और सीमांत किसानों के लिए।
- फलदार, चारा या नाइट्रोजन स्थिर करने वाले पेड़ अतिरिक्त मूल्य और स्थायित्व प्रदान करते हैं।

## स्थिति और लाभ

- वर्तमान में भारत के कुल भौगोलिक क्षेत्र का 8.65% एग्रोफॉरेस्ट्री के अंतर्गत आता है, जो लगभग 28.42 मिलियन हेक्टेयर है।
- एग्रोफॉरेस्ट्री लकड़ी के आयात को कम करने, कार्बन को अवशोषित करने और परती भूमि को उत्पादक क्षेत्रों में बदलने में सहायक हो सकती है।
- यह खाद्य, ऊर्जा, रोजगार और पर्यावरण संबंधी आवश्यकताओं को संबोधित करती है और पेरिस समझौते, बॉन चुनौती, संयुक्त राष्ट्र सतत विकास लक्ष्य (UN SDGs), संयुक्त राष्ट्र मरुस्थलीकरण रोकथाम सम्मेलन (UNCCD), तथा जैसे राष्ट्रीय अभियानों — जैसे किसानों की आय दोगुनी करना और ग्रीन इंडिया मिशन — के साथ सामंजस्य बनाती है।

## भारत में संबंधित पहलें

- NITI आयोग द्वारा GROW (एग्रोफॉरेस्ट्री के माध्यम से परती भूमि का हरितकरण और पुनर्स्थापन) रिपोर्ट और पोर्टल का शुभारंभ किया गया है।
- यह पूरे भारत में एग्रोफॉरेस्ट्री उपयुक्तता का आकलन करने के लिए GIS और रिमोट सेंसिंग का उपयोग करता है।
- इसने परती भूमि के हरितकरण और पुनर्स्थापन प्रयासों को मार्गदर्शन देने के लिए एग्रोफॉरेस्ट्री उपयुक्तता सूचकांक (ASI) विकसित किया है।
- भारत ने 2014 में विश्व की प्रथम राष्ट्रीय एग्रोफॉरेस्ट्री नीति प्रस्तुत की, जो उत्पादकता, लाभप्रदता और स्थिरता को बढ़ावा देने के लिए एग्रोफॉरेस्ट्री को प्रोत्साहित करती है।

**Source:** PIB

## भारत की पहली क्वांटम कंप्यूटिंग वैली संदर्भ

- भारत की प्रथम क्वांटम कंप्यूटिंग वैली का शुभारंभ जनवरी 2026 तक आंन्द्र प्रदेश के अमरावती में किया जाएगा।

## परिचय

- यह पार्क लाखों पेशेवरों को रोजगार देने हेतु डिजाइन किया गया है, जो अनुसंधान, नवाचार और औद्योगिक विकास को समर्थन देगा।
- यह भारत के राज्यों, सरकारी निकायों और संस्थानों के लिए सुलभ होगा।
- इसका उद्देश्य है कि क्वांटम तकनीक मानव समाज के प्रत्येक भाग के लिए लाभकारी सिद्ध हो।
- यह परियोजना राष्ट्रीय क्वांटम मिशन (NQM) के अनुरूप है।
- केन्द्रीय फोकस:** क्वांटम तकनीकों के माध्यम से उत्पादकता में वृद्धि और संपत्ति सूजन।

## राष्ट्रीय क्वांटम मिशन (NQM)

- सरकार ने NQM को 2023 में वित्त वर्ष 2023-24 से 2030-31 तक के लिए स्वीकृत किया।

## उद्देश्य:

- विज्ञान एवं उद्योग से जुड़े अनुसंधान एवं विकास को आरंभ करना, उसका पोषण करना और विस्तार देना तथा क्वांटम टेक्नोलॉजी (QT) में एक जीवंत एवं नवोन्मेषी पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण करना।
- यह क्वांटम प्रौद्योगिकी आधारित आर्थिक विकास को गति देगा, देश में नवाचार तंत्र को पोषित करेगा और भारत को क्वांटम तकनीकों एवं अनुप्रयोगों (QTA) के विकास में अग्रणी राष्ट्रों में शामिल करेगा।
- मिशन के उद्देश्यों में सुपरकंडक्टिंग और फोटोनिक तकनीकों जैसे विभिन्न प्लेटफॉर्मों पर 8 वर्षों में 50 से 1000 भौतिक क्यूबिट्स वाले मध्य-पैमाने के क्वांटम कंप्यूटर विकसित करना सम्मिलित है।

## महत्व

- NQM में देश के प्रौद्योगिकी विकास पारिस्थितिकी तंत्र को वैश्विक प्रतिस्पर्धा के स्तर तक पहुंचाने की क्षमता है।
- यह मिशन संचार, स्वास्थ्य, वित्तीय सेवाएं, ऊर्जा आदि क्षेत्रों में दवा डिजाइन, अंतरिक्ष, बैंकिंग, सुरक्षा जैसे अनुप्रयोगों के साथ बड़ा लाभ देगा।

- यह मिशन डिजिटल इंडिया, मेक इन इंडिया, स्किल इंडिया, स्टार्टअप इंडिया, स्टैंडअप इंडिया, आत्मनिर्भर भारत और सतत विकास लक्ष्यों (SDG) जैसी राष्ट्रीय प्राथमिकताओं को भी प्रोत्साहन देगा।

**Source:** PIB

## केंद्र ने अंतर्राष्ट्रीय आलू केंद्र की दक्षिण एशिया इकाई को मंजूरी दी

### संदर्भ

- केंद्र सरकार ने पेरु स्थित इंटरनेशनल पोटैटो सेंटर (CIP) के दक्षिण एशिया क्षेत्रीय केंद्र की स्थापना के प्रस्ताव को मंजूरी दे दी है।

### विवरण

- CIP-साउथ एशिया रीजनल सेंटर (CSARC) उत्तर प्रदेश के आगरा में स्थापित किया जाएगा।
- यह न केवल उत्तर प्रदेश, बिहार और पश्चिम बंगाल जैसे आलू उत्पादक राज्यों के किसानों की सेवा करेगा, बल्कि पूरे दक्षिण एशिया के देशों को भी लाभ पहुंचाएगा।

### उद्देश्य:

- आलू और शकरकंद की उत्पादकता, कटाई के बाद प्रबंधन और मूल्य संवर्धन में सुधार के माध्यम से खाद्य एवं पोषण सुरक्षा, किसानों की आय तथा रोजगार सृजन को बढ़ाना।
- चीन ने आठ वर्ष पहले अपना क्षेत्रीय CIP केंद्र स्थापित किया था, जिसे चाइना सेंटर फॉर एशिया पैसिफिक (CCCAP) कहा जाता है, जो पूरे पूर्वी एशिया एवं प्रशांत क्षेत्र की सेवा करता है।

### आलू की खेती

- भारत विश्व का दूसरा सबसे बड़ा आलू उत्पादक और उपभोक्ता देश है; वर्ष 2020 में भारत में 51.30 मिलियन टन आलू का उत्पादन हुआ।
- प्रथम स्थान पर चीन है, जिसकी आलू उत्पादन क्षमता 2020 में 78.24 मिलियन टन रही।

- दोनों देश मिलकर वैश्विक आलू उत्पादन (359.07 मिलियन टन) का एक-तिहाई से अधिक हिस्सा साझा करते हैं।
- भारत में उत्तर प्रदेश और पश्चिम बंगाल आलू उत्पादन में अग्रणी राज्य हैं, इसके बाद बिहार का स्थान है।
- गुजरात, मध्य प्रदेश और पंजाब अन्य प्रमुख आलू उत्पादक राज्य हैं।

**Source:** IE

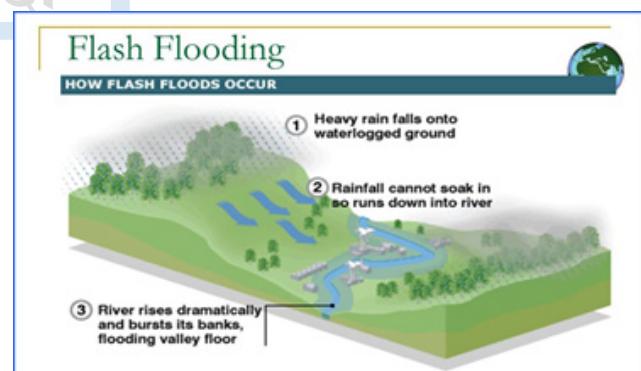
## आकस्मिक बाढ़

### संदर्भ

- पुनर्पुज्ज्ञा नदी में अचानक आई बाढ़, जिसमें बड़े पैमाने पर भूस्खलन हुआ, ने केरल के वायनाड जिले में दहशत फैला दी।

### आकस्मिक बाढ़ क्या होती है?

- आकस्मिक बाढ़ बहुत कम अवधि की स्थानीयकृत घटनाएँ होती हैं, जिनका चरम बहुत ऊँचा होता है और सामान्यतः बारिश और बाढ़ के चरम के बीच छह घंटे से भी कम समय होता है।



### अचानक बाढ़ के कारण

- तीव्र वर्षा:** कम अवधि में भारी और सघन वर्षा इसका मुख्य कारण है।
- ग्लेशियल झील विस्फोट बाढ़ (GLOFs):** पिघलने या हिमस्खलन के कारण ग्लेशियल झीलों से अचानक जल का निकलना।
- बादल फटना:** स्थानीयकृत, अत्यधिक भारी बारिश (जैसे, हिमालय जैसे पहाड़ी क्षेत्रों में)।

- उष्णकटिबंधीय चक्रवात और तूफान: चक्रवाती प्रणालियों से अचानक भारी बारिश (जैसे, मानसून या ग्री-मानसून के दौरान)।
- पहाड़ी क्षेत्र: खड़ी ढलानों के कारण तीव्रता से जल प्रवाहित होता है, जिससे घाटियों में अचानक जल जमा हो जाता है।
- नदी के किनारों पर अतिक्रमण: नदी की क्षमता कम हो जाती है, जिससे अचानक पानी आने पर पानी का बहाव बढ़ जाता है।
- जलवायु परिवर्तन: बादल फटने और अनियमित वर्षा सहित चरम मौसम की घटनाओं की आवृत्ति और तीव्रता बढ़ जाती है।

Source: TH

## प्रधान मंत्री संग्रहालय और पुस्तकालय

### संदर्भ

- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने नई दिल्ली स्थित तीन मूर्ति भवन में प्रधानमंत्री संग्रहालय और पुस्तकालय (PMML) सोसाइटी की 47वीं वार्षिक आम बैठक की अध्यक्षता की।

### परिचय

#### उत्पत्ति:

- यह तीन मूर्ति भवन में स्थित है, जो भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू का आधिकारिक निवास था।

- मूल रूप से इसे नेहरू स्मृति संग्रहालय और पुस्तकालय (NMML) के नाम से जाना जाता था, जिसकी स्थापना 1964 में नेहरू जी के निधन के बाद की गई थी।
- 27 जून 1964 को तीन मूर्ति भवन को नेहरू स्मृति संग्रहालय और पुस्तकालय (NMML) में परिवर्तित किया गया।
- 2021 में इसका नाम बदलकर प्रधानमंत्री संग्रहालय और पुस्तकालय (PMML) रखा गया, ताकि सभी भारतीय प्रधानमंत्रियों के योगदान को सम्मानित किया जा सके।
- डिज़ाइन:**
  - तीन मूर्ति भवन का डिज़ाइन ब्रिटिश वास्तुकार रॉबर्ट टॉर रसेल द्वारा 1929–30 में किया गया था।
- उद्देश्य:**
  - भारत के सभी प्रधानमंत्रियों की विरासत और योगदान को संरक्षित करना, प्रलेखित करना और प्रसारित करना।
  - आधुनिक भारतीय इतिहास में अनुसंधान के लिए एक प्रमुख संस्थान के रूप में कार्य करना।

Source: IE